राजदेव सिंह
निदेशक
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान
जलविज्ञान भवन
रूड़की – 247 667

निदेशक की कलम से.....

बड़े हर्ष का विषय है कि राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रूड़की राजभाषा हिंदी से जुड़े विभिन्न कार्यक्रमों के आयोजन के साथ–साथ गत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी अपनी वार्षिक हिंदी पत्रिका **"प्रवाहिनी"** का प्रकाशन कर रहा है। पत्रिका का यह 19वाँ अंक है। हर वर्ष इस पत्रिका का विमोचन हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर किया जाता है। इस पत्रिका के प्रकाशन से संस्थान के वैज्ञानिकों तथा अन्य कर्मचारियों को हिंदी लेखन की प्रेरणा मिलती है और वे अपने रूचिकर, ज्ञानवर्धक, महत्वपूर्ण तथा उपयोगी लेखों द्वारा इस पत्रिका के प्रकाशन में बढ़–चढ़ कर सहयोग दे रहे हैं। राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार की दिशा में इस तरह के प्रयास प्रशंसनीय तथा प्रेरणादायक हैं, जिससे वैज्ञानिक तथा तकनीकी लेखन को व्यापक बढ़ावा मिलता है।

उल्लेखनीय है कि राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान की कार्य–संस्कृति वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रकृति की है, फिर भी राजभाषा संबंधी संवैधानिक प्रावधानों को ध्यान में रखते हुए संस्थान अपने वैज्ञानिक तथा तकनीकी कार्यों में राजभाषा हिंदी का यथासंभव प्रयोग सुनिश्चित कर रहा है।

सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रगामी प्रयोग, प्रचार–प्रसार तथा विकास में अभिवृद्धि सुनिश्चित करने के दृष्टिकोण से राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रूड़की हिंदी कार्यशालाएं, संगोष्ठियां, हिंदी दिवस, पखवाड़ा, मास इत्यादि अनेकों कार्यक्रमों का आयोजन करता है। इसी क्रम में हर वर्ष हिंदी पत्रिका **"प्रवाहिनी"** भी प्रकाशित की जाती है। प्रवाहिनी का निरन्तर प्रकाशन इस बात का द्योतक है कि संस्थान के पदाधिकारियों का हिंदी के प्रति गहरा लगाव है।

प्रवाहिनी के इस अंक में संस्थान के पदाधिकारियों तथा उनके परिजनों के अलावा संस्थानेत्तर व्यक्तियों के उपयोगी एवं ज्ञानवर्धक लेखों को भी सम्मिलित किया गया है। पत्रिका में छपे लेखों की भाषा हर वर्ग के पाठकों को ध्याान में रखकर सहज एवं सरल रखी गई है। मुझे पूरा विश्वास है कि यह अंक समस्त सुधी पाठकों की अपेक्षाओं के अनुरूप रोचक तथा उपयोगी साबित होगा।

हिंदी मास के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में प्रतिभाग करने वाले पदाधिकारियों को मेरी ओर से हार्दिक बधाई। मैं **"प्रवाहिनी"** के इस अंक के सम्पादन, प्रूफ शोधन तथा प्रकाशन संबंधी कार्यों से जुड़े समस्त पदाधिकारियों तथा उन लेखकों का आभारी हूँ जिनके रोचक तथा ज्ञानवर्धक लेखों के बल पर ही इस अंक का प्रकाशन संभव हो पाया है। मैं इस पत्रिका की अपार सफलता की मंगल कामना करता हूँ।

(राजदेव सिंह)